पीछला बाकी दिन,रह्या घड़ी चार
धाम वतन चलने की,मोमिन करें विचार
अर्श की नमाज का,आए पोहोंच्या बखत
गोकुल अर्ज करत है,सामें होए तखत
हमको इन खेल से,सिताब काढ़ो श्री राज
भए मनोरथ पूर्ण,रहया न कोई काज
श्री धाम धनी सुनत हैं,ए वाणी जो मकबूल
दुआयें जो मोमिनों की,होत है कबूल

अर्जी सुन्दरसाथ करे,चरणों में हो के खड़े
पिया जी धनी जी,खेल को बस करो,दिन बीते हैं बड़े
1- अर्श में प्रीतम से,क्यों रब्द हमने की
खेल क्यों मांग लिया,यह समझ हम में न थी
पिया जी...
2- माया भी देखी है,दुख भी देखा है
खेल भी देख लिया,इश्क भी देखा है
पिया जी धनी जी,ले चलो ले चलो
दिन बीते...
3- आपकी जुदाई को,अंगना कैसे सहे
हैं शर्मसार हमहीं,आपसे कैसे कहें
पिया जी....
4- अंगना जान के ही,आपने जगाया है
लेके चलते क्यूं नहीं,समझ न आया है
बस हमरा न चला,साथ चरणों में पड़े
अर्जी..